2

मौर्यकाल से गुप्त काल तक की भारतीय कला

(चौथी शताब्दी ई॰ पूर्व से छठी शताब्दी ई॰ तक)

Art from Maurya to Gupta Period

(4th C.B.C. to 6th CAD)

2.0 भूमिका

चन्द्रगुप्त ने 322 ई॰पू॰ में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की और चन्द्रगुप्त ने भारत में प्रथम बार एक केन्द्रीय शासक के अन्तर्गत विशाल साम्राज्य स्थापित कर लिया।

मौर्य वंश में महाराजा अशोक एक महान एवं कलाप्रिय शासक हुए जिसने अनेक स्थापत्य कला सम्बंधी कार्य किये। महाराजा अशोक ने अपने राज्य में जगह–जगह पत्थर के खम्भों के उपरी सिरों पर बैल, हाथी एवं सिंहों की मूर्तियां बनवाई। मगध तथा उसके आस–पास के क्षेत्रों में भी स्त्री–पुरूष, देवी–देवताओं की मूर्तियां खोज में मिली हैं।

वंशानुगत साम्राज्य तभी तक बने रहते हैं जब तक योग्य शासकों के उत्तराधिकारी भी योग्य हों। अशोक के बाद मौर्य साम्राज्य भी बिखर गया। इसके बाद शुंग काल में भी स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला में भी अच्छे काम हुए। बौद्ध धर्म सम्बंधी स्तूपों तथा मूर्तियों का निर्माण इसी काल में हुआ, जिसमें **सांची** तथा **भरहुत** का विशेष स्थान हैं। मौर्यकाल की समाप्ति पर भारत से बाहर की शक्तियों ने आक्रमण करना शुरू कर दिया जिनमें एक जाति कुषाण भी थी। इस जाति का प्रसिद्ध राजा कनिष्क हुआ। मथुरा तथा उसके आस–पास से, उस काल की भी अनेक मूर्तियां प्राप्त हुईं।

कुषाणों के पश्चात भारत में एक नए वंश का उदय हुआ जिसे गुप्त वंश के नाम से जाना जाता है। इस काल में वास्तुकला, साहित्य तथा मूर्तिकला का बहुत विकास हुआ। इस काल को अनेक क्षेत्रों में शांति तथा विकास के कारण **'स्वर्ण युग'** के नाम से जाना जाता है।

मौर्य तथा गुप्त वंश के शासन काल में बनी कुछ प्रतिनिधि मूर्तियों का अध्ययन आप इस पाठ में करेंगे।

2.1 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- मौर्य से गुप्त काल की कला का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- पाठ्यक्रम में निर्धारित कला सामग्री के कलाकार और संग्रहालय का मूल्यांकन कर सकेंगे और उनके संग्रहीत स्थानों का वर्णन कर सकेंगे।
- इस काल की कला सामग्री की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।

सारनाथ का सिंह–शीर्ष

2.2 सारनाथ का सिंह – शीर्ष

शीर्षक	–	*सिंह–शीर्ष*
माध्यम	–	*बलुआ पत्थर*
रचनाकाल	–	*अशोक का शासन काल, लगभग 272–232 ई॰ पूर्व*
शैली	–	*मौर्यकालीन शैली*
आकार	–	*ऊँचाई 213.5cm*
मूर्तिकार	–	*अज्ञात*
संग्रह	–	*सारनाथ संग्रहालय, उत्तर प्रदेश*

सामान्य परिचय

अशोक का सिंह–शीर्ष जो कि सारनाथ के पुरातत्व संग्रहालय में संग्रहीत है, यह अशोक स्तम्भ शीर्ष है, जिसे महान सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ई॰ पूर्व सारनाथ के हिरन पार्क में मृगादवा में स्थापित कराया था। पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने उस शीर्ष को 1905 ई॰ में खोदकर निकाला था। यहां यह सिंह–शीर्ष जैसा कि आज सुरक्षित है लगभग सात फुट ऊंचा है। जब ह्वूनसांग ने सारनाथ का भ्रमण किया तब ह्वूनसांग लिखता है कि इसके सामने एक सत्तर फुट ऊंचा पत्थर का खम्भा था जो कि जैडे के समान मुलायम था और चकाचौंध चमक वाला था। यह खम्भा उस स्थान पर था जहां पर बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त करने के बाद सर्वप्रथम अपने धर्म का उपदेश दिया था।

पाठगत प्रश्नः (2.2)

सही उत्तर छाँट कर लिखें :–

(1) सारनाथ का सिंह–शीर्ष जिस माध्यम से बना है उसका नाम है–
- (i) मिट्टी
- (ii) संगमरमर
- (iii) बलुआ पत्थर

(2) स्तम्भ का निर्माण निम्न राजा के राज्यकाल में हुआ–
- (i) चन्द्रगुप्त
- (ii) अशोक
- (iii) अकबर

(3) इस मूर्ति को राज्यचिन्ह बनाने वाला
- (i) दूरदर्शन है
- (ii) दिल्ली सरकार है
- (iii) भारत सरकार है

यक्षिणी (चवंर धारिणी)

2.3 यक्षिणी (चवंर धारिणी)

शीर्षक	–	*यक्षिणी*
माध्यम	–	*बलुआ पत्थर*
निर्माण काल	–	*मौर्यकाल, तीसरी शताब्दी ई॰ पूर्व*
स्थान	–	*दिदारगंज, पटना*
आकार	–	*ऊँचाई – 162.5cm*
मूर्तिकार	–	*अज्ञात*
संग्रह	–	*पटना संग्रहालय, पटना, बिहार*

सामान्य परिचय

तीसरी शताब्दी ई॰पूर्व, मौर्य राज्य का संरक्षक महाराजा अशोक था। उसकी प्रथम यक्षिणी की यह आदम कद मूर्ति, उस काल की मूर्ति कला का सुन्दर उदाहरण है। यह मूर्ति दानेदार, बलुआ पत्थर से बनाई गई है जिस पर बहुत ही कुशलतापूर्वक, शीशे के समान पालिश की गई है जिसके कारण विद्वानों द्वारा इसे मौर्यकाल का माना जाता है। मक्खियों को उड़ाने वाली चंवर लिये हुये महिला – जिसे आमतौर पर यक्षिणी कहा जाता है, की खोज बिहार में एक प्राचीन स्थान दिदारगंज में हुई। यह मूर्ति भारतीय कला की *मोनालिसा* मानी जाती है।

मूर्तिकार द्वारा मूर्ति में ऐसी अद्‌भुत और कोमल सुन्दरता दिखाई गई है जो कि राजकीय शान–शौकत के साथ खड़ी है। यह अपने में एक सुन्दरता का उदाहरण है। कुछ विद्वानों का ऐसा मत है कि न ही इससे पहले और न ही इसके बाद भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में ऐसी मूर्ति का निर्माण हुआ।

पाठगत प्रश्न : (2.3)

निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें –

(क) चवंर धारिणी मूर्ति .....में प्राप्त हुई है।

(ख) यह मूर्ति मौर्यकाल की है क्योंकि इस पर उत्तम.....दिखाई देता है।

(ग) यह मूर्ति भारतीय कला की .....मानी जाती है।

सांची का महास्तूप

2.4 सांची का महास्तूप

शीर्षक	–	*सांची का महास्तूप*
माध्यम	–	*बलुआ पत्थर*
निर्माण काल	–	*शुंग, तीसरी शताब्दी ई॰ पूर्व से प्रथम शताब्दी*
आकार	–	*36 मीटर*
वास्तुकार	–	*अज्ञात*
स्थान	–	*सांची, जिला रायसेन, मध्य प्रदेश*

सामान्य परिचय

अशोक ने अनेकों बौद्ध स्तूपों तथा बौद्ध विहारों का निर्माण कराया। सांची स्तूप के निर्माण की शुरूआत उसने ही कराई थी। अशोक के बाद उसके राज्य का पतन हो गया। दक्षिण भारत में शुंग तथा सातवाहन वंश सत्ता में आये। इनमें सातवाहन वंश सबसे अधिक प्रसिद्ध था, जिसने सांची के स्तूप को पूरा कराया एवं चार तोरण बनवाये। यद्यपि शुंग और सातवाहन ब्राह्मण थे फिर भी इन्होंने बौद्ध धर्म का पूर्ण आदर किया। विशाल आकार के कारण इसे महास्तूप कहा जाता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि भगवान बुद्ध के कुछ अवशेष सांची के स्तूप में संजोकर रखे गये हैं। यह अर्धवृत्ताकार स्तूप है जिसके चार सुन्दर द्वार बनाए गये हैं।

पाठगत प्रश्नः (2.4)

निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें।

(क) सांची के स्तूपों में .....के अवशेष रखे गये हैं।

(ख) सांची के स्तूप की विशालता के कारण इसे .....कहा जाता है।

(ग) चार तोरणों का निर्माण .....ने किया था।

जैन तीर्थंकर

2.5 जैन तीर्थांकर

शीर्षक	–	*जैन तीर्थांकर*
माध्यम	–	*लाल बलुआ पत्थर*
निर्माण काल	–	*गुप्तकाल, पांचवी शताब्दी*
शैली	–	*गुप्तकालीन शैली*
आकार	–	*95x60 सेंटीमीटर*
मूर्तिकार	–	*अज्ञात*
संग्रहालय	–	*राजकीय संग्रहालय, लखनऊ, उ०प्र०*

सामान्य परिचय

जैन तीर्थांकर की मूर्ति गुप्त युग की महान देन है। प्रस्तुत मूर्ति ध्यान–मग्न अवस्था में एक चौकोर चबूतरे पर स्थित है तथा **वज्रपर्यकासन** मुद्रा में है। महावीर स्वामी, जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थांकर थे। इस मूर्ति में जैन धर्म के अनुयायियों के विचारों और भावनाओं का सुन्दर प्रदर्शन किया गया है तथा यह पवित्र वस्तुओं से घिरी हुई है।

जैन तीर्थांकर (महावीर स्वामी) ने जन्म – मरण के चक्कर से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करने पर बल दिया। उन्होंने तीन रत्नों विश्वास, उचित कर्म तथा सत्यता पर बल दिया। प्रस्तुत मूर्ति में कलाकार ने इन सब भावों को उचित प्रकार से उकेरा है। यह मूर्ति मथुरा से प्राप्त हुई है।

पाठगत प्रश्नः– (2.5)

सही उत्तर छाँट कर लिखें

(क) जैन तीर्थांकर की मूर्ति अब
- (i) राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में है
- (ii) भारतीय संग्रहालय, कोलकाता में है
- (iii) राजकीय संग्रहालय, लखनऊ में है

(ख) तीर्थांकर की मुद्रा
- (i) अभयमुद्रा है
- (ii) भूमिस्पर्शमुद्रा है
- (iii) वज्रपर्यकासन मुद्रा है

(ग) यह मूर्ति
- (i) बुद्ध की है
- (ii) महावीर की है
- (iii) पार्श्वनाथ की है

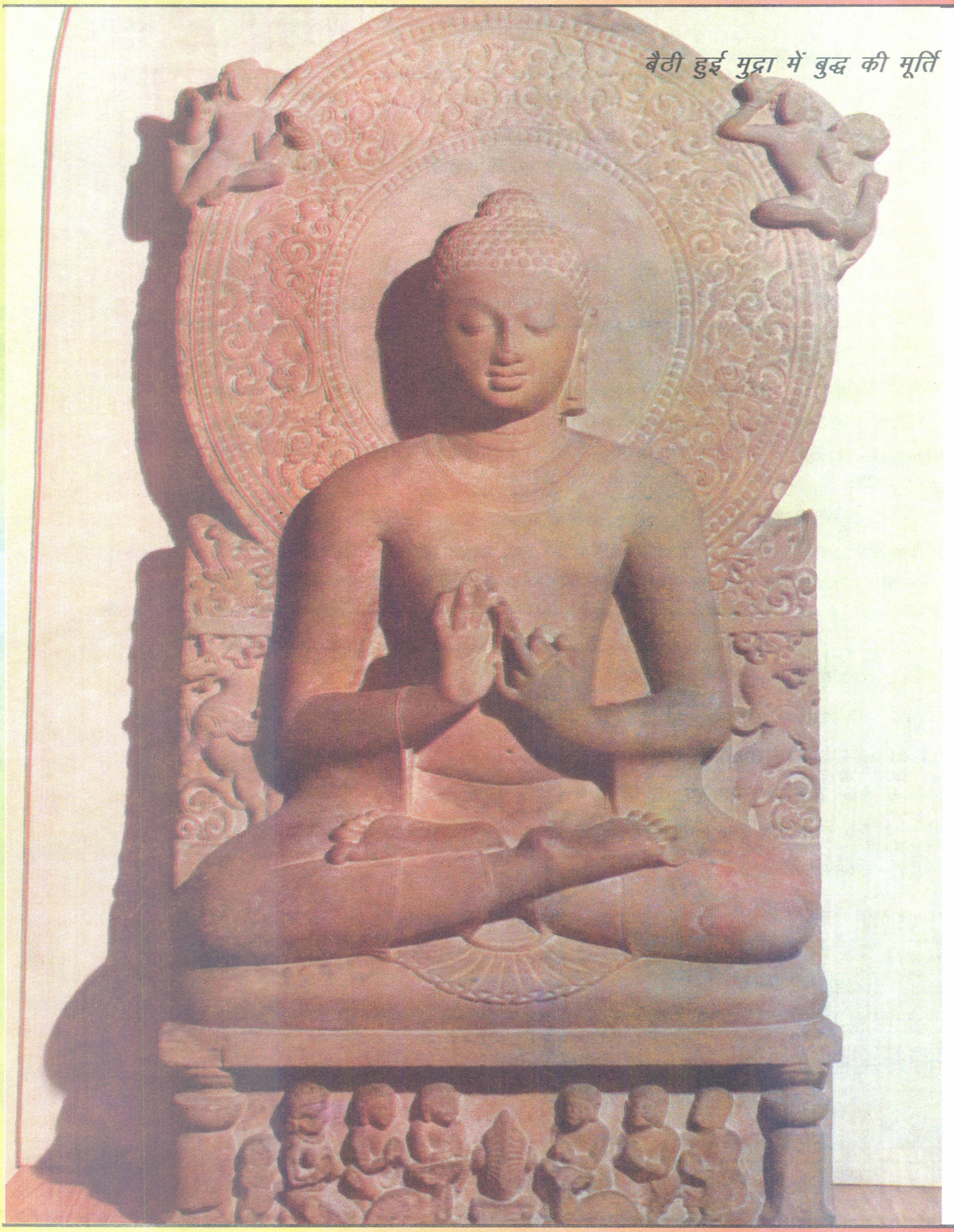

बैठी हुई मुद्रा में बुद्ध की मूर्ति

2.6 बैठी हुई मुद्रा में बुद्ध की मूर्ति

शीर्षक	–	*सारनाथ बुद्ध*
माध्यम	–	*बलुआ पत्थर*
निर्माण काल	–	*गुप्तकाल, पांचवी शताब्दी*
आकार	–	*ऊँचाई – 160 सेंटीमीटर*
शैली	–	*गुप्तकालीन शैली*
मूर्तिकार	–	*अज्ञात*
संग्रह	–	*सारनाथ संग्रहालय, सारनाथ, म०प्र०*

सामान्य परिचय

प्रस्तुत मूर्ति में भगवान बुद्ध के शांत, गम्भीर मुखमंडल को धर्मचक्रप्रवर्तन की मुद्रा में मूर्तिकार ने दिखाया है जिसमें भगवान बुद्ध की आधी खुली आंखें, शांति के भाव, घुंघराले केश तथा ध्यानमग्नता दर्शनीय है। भगवान बुद्ध पद्मासन में बैठे हैं।

यह मूर्ति पांचवी शताब्दी की गुप्त कला की सर्वश्रेष्ठ नमूना है। उस काल में भारतीय मूर्तिकार अधिकतर धर्म से सम्बंधित मूर्तियों का निर्माण करते थे।

पाठगत प्रश्नः (2.6)

निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें

(क) इस मूर्ति के आसन का नाम .....है।

(ख) यह बुद्ध की मूर्ति.....काल की है।

(ग) मूर्ति की हस्तमुद्रा का नाम.....है।

बैठी हुई मुद्रा में महात्मा बुद्ध (गांधार शैली)

2.7 बैठी हुई मुद्रा में महात्मा बुद्ध (गांधार शैली)

शीर्षक	–	*बैठी हुई मुद्रा में महात्मा बुद्ध*
माध्यम	–	*लाल बलुआ पत्थर*
निर्माण काल	–	*कुषाण काल*
आकार	–	*ऊँचाई 75 सेंटीमीटर*
शैली	–	*गांधार शैली*
मूर्तिकार	–	*अज्ञात*
संग्रहालय	–	*राजकीय, मथुरा, उत्तर प्रदेश*

सामान्य परिचय

वैसे तो मथुरा शैली का आरम्भ ई॰ की प्रथम शताब्दी से माना जाता है किन्तु इस शैली के उत्तम कार्य के नमूने कुषाण काल में ही मिलते हैं। कुषाण काल में इस शैली में बनी मूर्तियां पश्चिम में तक्षशिला और पूर्व में सारनाथ तक पाई गईं। गांधार शैली की मूर्तियां लाल पत्थर की बनाई जाती थीं और उन्हें पालिश किया जाता था। गांधार शैली की इस मूर्ति में वास्तविकता के दर्शन हैं। यक्षियों की खड़ी मूर्तियां, बुद्ध और बौद्धिसत्व की अनेक मूर्तियां तथा यक्षिणी की अनेक मूर्तियां इस शैली की ही देन हैं। भगवान बुद्ध की केश सज्जा घुंघराले बालों वाली है जो गांधार शैली की मूर्तियों की एक प्रमुख विशेषता है।

पाठगत प्रश्न : (2.7)

निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें–

(क) यह मूर्ति .....काल की है।

(ख) यह बुद्ध की मूर्ति .....पत्थर की बनी है।

(ग) गांधार शैली का महत्त्वपूर्ण योगदान .....प्रतिमा निर्माण है।

2.8 सारांश

चौथी शताब्दी ई॰ पूर्व से छठी (6) शताब्दी ई॰ तक 800 वर्ष के काल का हमारी सांस्कृतिक धरोहर में महत्वपूर्ण योगदान हैं। इस काल की मूर्ति–कला निर्माण सम्बधी गतिविधियों के अनेक उदाहरण आपको उपलब्ध कराये गये हैं। इस काल में भारत वर्ष में भारतीय जनता के ऊपर बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा हिन्दू धर्म का प्रभाव सर्वत्र देखा जा सकता है। इन तीनों धर्मों को अलग–अलग राजाओं का संरक्षण प्राप्त था। इस काल की मूर्ति कला प्रमाणित करती है कि भारत के विभिन्न भागों में मिलने वाले मूर्ति और कला के सुन्दर नमूने भारतीय कला के उन्नत होने के प्रमाण हैं। गांधार और मथुरा शैली में बनी अनेक बुद्ध की मूर्तियां मिली हैं। उत्तर और दक्षिण के अनेक राजाओं ने विहार तथा स्तूप बनवाये थे।

2.9 पाठान्त प्रश्नों के उत्तर

2.2	(क)	बलुआ पत्थर,	(ख) अशोक,	(ग)	भारत सरकार।
2.3	(क)	दिदारगंज,	(ख) पालिश,	(ग)	मोनालिसा।
2.4	(क)	भगवान बुद्ध,	(ख) महास्तूप,	(ग)	सातवाहन वंश।
2.5	(क)	राजकीय संग्रहालय,	(ख) वज्रपर्यकासन मुद्रा,	(ग)	महावीर।
2.6	(क)	पद्मासन,	(ख) गुप्त,	(ग)	धर्मचक्र प्रवर्तन।
2.7	(क)	कुषाण,	(ख) लाल बलुआ,	(ग)	बुद्ध।

2.10 माडल प्रश्न

(1) बौद्ध कला के क्षेत्र में मौर्य वंश की देन को बतलाइये।

(2) गांधारकाल की मूर्तियों पर एक निबंध लिखिए।

(3) जैन तीर्थांकर मूर्ति के मुख्य लक्षणों का विवेचन कीजिए।

2.11 शब्दकोश

मोनालिसा – प्रसिद्ध ईटालियन चित्रकार लिआनार्दोः– दि– विन्ची का चित्र

तीर्थांकर – उच्चतम ज्ञान–प्राप्त जैन महापुरूष

मुद्रा – प्रतीकपूर्ण भाव–संकेत